Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

पिथौरागण जनपद में निवास करने वाली राजी जनजाति की आर्थिक स्थिति व उसमें होने वाले परिवर्तन

ओम प्रकाश सिंह यादव
ग्राम टोड़रपुर, पो0 मनियां मिर्जाबाद,
गाजीपुर, उ0 प्र0, भारत।

शोध आलेख सार– शिक्षा का मूल उद्देश्य लोकतांत्रिक, समाजिक, आर्थिक, नैतिक और जीवन उपयोगी मूल्यों से आम जन को विमुख कर दिया। जिससे समाज में आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, समाजिक असमरसता फूट डालों राज करो की नीति ने हमारे समाज व देश को प्रभावित किया। देश की उन्नति जिस प्रकार से होनी चाहिऐ उस प्रकार से नहीं हो पायी। अवश्यकता यह है कि देश और समाज को ''परम् वैभव'' के पद पर पहुंचाने के लिए शिक्षा को समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों से युक्त करने की जरुरत है। समाज के उपेक्षित वर्गों के पास भले ही अक्षर का ज्ञान न हो लेकिन उनमें नैतिक मूल्यों का ज्ञान कूट – कूट के भरा है। यही ज्ञान हमने व्यक्तिगत सर्वेक्षण में समाजिक रुप से उपेक्षित राजी जन जाति में देखने को मिला

मुख्य शब्द– पिथौरागण जनपद, राजी, जनजाति, लोकतांत्रिक, समाजिक, आर्थिक, नैतिक।

विश्व में निवास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक समाज की मूल भूत अवश्यकता रोटी–कपड़ा–मकान के बिना सम्भव नहीं है । मानव सृष्टि के शुरुवात से ही जीवकों पार्जन के लिए कुछ ना कुछ व्यवसाय या आर्थिक क्रिया कलाप करता रहा है। विकास की अवस्थाओं को जंगली बर्बर और सभ्य तीन रुपों में प्रसिद्ध समाज शास्त्री मर्टन ने बांटा है। जंगली अवस्था में व्यक्ति का जीवन पुर्णरुपेण जंगलों पर निर्भर हुआ करता था। जंगली कन्दमूल फल, जंगली उत्पादों को खाकर तथा पेड़ो पर ही रह कर व गुफाओं में अपना जीवन व्यतीत करता था । पेड़ – पौधों की छाले एवं पत्तीयों का प्रयोग अपने वस्त्र के

रुप में करता था। बर्तनों के रुप में भी पेड़ – पौधों को ही प्रयोग करता था। सभ्यता के साथ – साथ धीरे – धीरे उसमें परिर्वतन होता चला गया। पाषाण युग, नव पाषाण, युग, वैदिक युग से होते हुए आज तक मानव ने अनेक प्रकार के अविष्कार किये है। जिसके उनका जीवन सरलता से चल सके। मानव स्वभाव से ही खोजी है। हमें विश्व की प्राचीन सभ्यताओं के अध्ययन से पता चला है कि किस प्रकार म्रिस की व ईराक की दजला फरात तथा सिन्धु घाटी नदी सभ्यता मे मानव ने कैसे – कैसे विकास किया है। अवश्यकता अविष्कार की जननी है। कहा गया है कि ''अर्थ प्रधान विश्व कर राखा, जो जस अथै तस फल चाखा'' भारतीय दर्शन की शुरुवात ही अर्थवादी दार्शनिक चारवाक से होती है। वह कहता है कि ''यावत् जीवेत् सुखम् जीवेत् भष्मि भुतस् देहस्च पुर्न आगम कुतो'' सुख पूर्वक जीवन जीने के लिए व्यक्ति अर्थ को महत्व देता रहा है। भारतीय पुरुषार्थ व्यवस्था धर्म, अर्थ, काम मोक्ष में भी अर्थ की महता को विशेष महत्व दिया गया है।

पिथौरागण जनपद के कुल नौ गांवों में निवसित राजी जन जाति के सर्वक्षण से पता चला कि इन परिवारों की आर्थिक स्थिति बहुत ही सोचनी है । समस्त राजी परिवारों में तीन परिवारों को छोड़ कर समस्त परिवार गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करते है । सरकारी योजनाओं के द्वारा मनरेगा जॉब कार्ड के तहत प्रत्येक परिवार को 100 दिन के रोजगार की व्यवस्था तो की गई है । लेकिन इसका वास्तविक लाभ इन परिवारों को नहीं मिल पा रहा है । सरल समाज व ग्रामीण समाज होने के कारण पूर्णतः कृषि कार्यों पर निर्भर है । आधुनिक वन सरंक्षण अधिनियम के तहत वनों पर उनका अधिकार सीमित होता जा रहा है । कृषिगत मिट्टी को उपजाऊ पन का न होना जंगली जानवरों व बन्दरों का आतंक उनको कृषि कार्य से विमुख कर दिया है । आस – पास के परिवारों के खेतों में खेतिहर मजदूर के रुप में मजदूरी भी मिल जाया करती थी । किन्तु आम ग्रामीण जन भी जंगली जानवरों व बन्दरों के आतंक से कृषि कार्य छोड़ चुके है । इससे इस जन जाति के ऊपर जीविकों पार्जन का संकट उत्पन्न हो गया है । इसके अलावा ग्रामीण अर्थ व्यवस्था की रीढ़ पशुपालन हुआ करता है । सरकार द्वारा योजना चलाकर सन् 2001 में इनके लिए प्रत्येक परिवार को घर तथा एक गाय दिया गया है । घुमन्तु जन जाति होने के कारण इनको पशुपालन करना अच्छा नहीं लगा तथा जो आवास बने थे । वे कुछ सड़क मार्ग के
नजदीक बने थे । जिससे उनके चारे का संकट हो गया । रहन – सहन की असुविधा के चलते अधिकांश परिवार उस निवास स्थान से चले गये । कुछ परिवार तो वहां जाकर पता चला कि रात को खुले आसमान में सोने के आदि होने के चलते रात को चिल्ला उठते थे । कि घर का छत गिर रहा है । और वे वहां छोड़कर भग गये । किन्तु आज भागी चौरा के पास कुलेख में कुछ परिवार आकर के रहने लगे है । तथा विकास के पथ पर चल पड़े है ।

ये मुलतः मजदूरी लकड़ी का चिरान और ईधन की लकड़ीयां बेचने पर निर्भर है । साथ ही साथ ये लकड़ी के कृषि यन्त्र और घरेलु उपयोग की वस्तुऐं बनाकर बेचते है । लेकिन बाजार में जाने पर इनके भोले – भाले स्वभाव के कारण साहुकार ठगने का कार्य करत है। उचित मूल्य नहीं देते है । ये गांवों में मुसल बनाकर बेचा करते थे। किन्तु आज कल आधुनिक साधन मिक्सी, ओखल ने पुराने जमाने का मुसलों का कार्य समाप्त कर दिया।

इससे यह रोजगार भी बन्द होने की कगार पर है ।लकड़ी चिरान का कार्य वन अधिनियमों के चलते प्रभावित हो रहा है। वन अधिकारी व पुलिस उनको डरा धमका कर शोषण करने का कार्य कर रही है । काष्ठ शिल्प कला की निपुर्णता बाजार नजदीक न होने के चलते प्रभावित हो रही है। भारत सरकार ने आदिवासी उत्पादों को आम जन तक सुलभ कराने के लिए योजना चला रही है किन्तु इन योजनाओं को वास्तविक धरातल पर ले जाये बिना बेकार है । इसमें मुख्य भूमिका उनका कम शिक्षित होना व जागरुकता की कमी का होना है ।कमजोर आर्थिक स्थिति का कारण कृषि व्यवस्था में नकामी के साथ – साथ कमजोर व परम्परागत कृषि प्रणाली पर निर्भरता, उन्नत किस्म के बीजों की जानकारी का अभाव व अन् उपलब्धता भी है । कृषि कार्य को परम्परागत ज्ञान के सहारे किया जा रहा है । तथा पैतृक पेशे से लगाव व परम्परावादिता भी इनको पिछड़ा बना रही है ।वहां सर्वेक्षण करने पर मुझे यह आभास हुआ कि अन्य समुदाय जो कृषि कार्य से विमुख हो रहे है ।उसके पिछे सरकार की मुफ्त में या कम किमत पर अनाज की उपलब्धता भी है । इस सरकारी मुफ्तखोरी ने आम जन को कृषि कार्य से विमुख कर दिया है ।राजी परिवार के रहन सहन के लिए सरकार ने आवास की व्यवस्था की हुई है । लेकिन वहां पर जाकर देखने पर पता चला की मानव आवास में नीचली हिस्से में गोट (जानवरों के बांधने का स्थान) बना रखा है । तथा ऊपरी हिस्से को बांस बल्ली व पट्टरे बांटकर पट्टनी बनाकर ऊपरी भाग में वह स्वयंम रहते है । सरकार की बकरी आश्रय योजना से समान्यतः नगण्य परिवार आच्छादित है । लेकिन प्रधान मंत्री आवास योजना से लगभग सभी परिवार लाभाविन्त है । गांव में जाने पर उनको यह आभास हुआ कि कोई सरकारी आदमी आये है । व हम लोगों को कोई विशेष योजना मिलने वाली है । वे टुटे – फुटे घरों को दिखाकर पुनः आवास के लिए प्रार्थना कर रहे थे । परिवार बढ़ने के साथ – साथ दुसरें जनों को भी आवास की आवश्यकता है । इस पर सरकार को विशेष ध्यान देने की जरुरत है । कुछ परिवारों के पास घास – फुस की झोपड़ी बनी है उसी में आधे हिस्से में बकरी व अन्य पशु बंधे हुए है । प्रत्येक गांव में बिजली की व्यवस्था है । कागज में ये भी विद्युतिकृत है । किन्तु वास्वत में लकड़ी के छिलके

व अन्य काठ पदार्थ से उजाला का कार्य करते है । इन परिवारों का मुख्य व्यवसाय मजदूरी है । जैसे – ईधन हेतु लकड़ी काटकर बेचना, लकड़ी चिरान मछली मार कर बेचना, कृषि कार्यों में मजदूरी करना इत्यादि । ग्राम किमखोला से मात्र दो व्यक्ति राजकीय सेवा में कार्यरत है । शेष आठ ग्रामों से कोई भी व्यक्ति राजकीय सेवा में नहीं है । साथ ही साथ प्राईवेट कार्यों में भी शिक्षा विभाग में जुड़ा एक आदमी इसी परिवार से है । शेष सभी परिवारों में जीवकों पार्जन का साधन प्रायः ग्रामीण स्तर पर ही विद्यमान है । वर्तमान समय में सरकरी योजनाओं के तहत मुर्गी पालन, खरगोश पालन, बकरी पालन, भैंस पालन, गौशाला आदि व्यवसायों को भी कुछ परिवार अपनाने लगे है । लेकिन यह व्यवसाय न हो कर जीवकों पार्जन ही है । सर्वेक्षण करने पर पता चला कि कुछ लोग बकरी आश्रय सरकार द्वारा प्रद्दत सहायता से तो निर्मित करा लिऐ है । लेकिन बकरीयों का कही भी अता – पता नहीं चला । ये लोग कोई भी व्यवसाय सिर्फ अपने परिवार के भरण – पोषण के लिए करते है । सरकार स्थानी निकाय की उदासिनता के चलते तथा इनको सरकार पद्दत योजनाओं की

जानकारी न होने से इनका विकास नहीं हो पा रहा है । शैक्षिक पिछड़ापन व अन्य समाज से दूरी भी इसमें एक कारक है । अवश्यकता इस चीज की है कि समाज के जागरुक लोग व स्थानीय प्रशासन इनके लिए सरकार द्वारा प्रद्दत योजनाओं का धरातल पर प्रचार करे । राजी परिवारों के अध्ययन से यह तो पता चलता है । कि पशुपालन में उनकी रुचि बढ़ी है । किन्तु पशुपालन के नाम पर मुर्गी और बकरीयों को छोड़

करके अन्य से कोई भी लाभ नहीं लिया जा सका है । (4)

क्रम सं0	गांव का नाम	गाय	भैंस	बैल	बकरी	मुर्गी	पषुविहीन व अन्य
1	अलतरड़ी	10	2	11	25	20	5
2	भगतीरवा	7	5	10	27	25	7
3	चिफलतरा	6	4	8	22	21	4
4	गड़ागांव	5	2	7	20	23	3
5	जमतड़ी	6	4	6	24	27	8
6	किमखोला	5	3	7	25	29	7
7	कुटाचौरानी	6	4	5	26	27	5
8	मदनपुरी	4	5	6	29	30	8
9	कुलेख	4	3	6	29	32	8
	कुल योग	53	32	66	227	234	55

इस प्रकार यह पता चलता है कि ये लोग गाय,भैंस व अन्य जानवर रखने लगे है । सर्वप्रथम

2001 में भारत सरकार व राज्य सरकार के प्रयास के फलस्वरुप इनकों गायें प्रदान की गई । उस समय अधिकांश ने तो इन गायों का छोड़ दिया या बेच दिया लेकिन इस योजना के फलस्वरुप उनमें पशुपालन की ललक धीरे – धीरे बढ़ने लगी । भारत के अन्य जन जातियों मे मध्य भारत की जन जातियां या किसी कार्यों में लग गई है । या कृषि मजदूरी करती है। या कुछ औद्योगिक कम्पनीयों में काम करने लगी है । उनकी तुलना में ये अभी उद्योगों में नहीं लगे है । किन्तु उस प्रक्रिया की तरफ धीरे – धीरे चलने लगे है । कृषि इस समुदाय द्वारा नाम मात्र की जाती है । जिसका मुख्य कारण कृषि योग्य भूमि का कम होना सिंचाई सुविधाओं के लिए पूरी तरह जलवायु पर निर्भर होना है । इस कारण ये लोग अब दैनिक मजदूरी करना पसन्द करने लगे है । इन परिवारों के अधिकांश भूमि बे नाम वन भूमि है । और इनका जमीन पर स्वामित्व नहीं है । कृषि कार्यों के लिए वे परम्परागत बीजों के साथ – साथ जैविक खादों का प्रयोग करते है । ये लोग कृत्रिम खादों का प्रयोग अभी तक नहीं करते है । इस दृष्टि से देखा जाये तो भारत सरकार जिस जैविक कृषि की बात आज कल कर रही है । वह इनमें परम्परा

से ही विद्यमान है । अवश्यकता इस चीज की है कि बीजों के उन्नत किस्म की उपलब्धता इनकों स्थानीय स्तर पर कराई जाये । विषम जलवायु

एवं भौगोलिक विषम परिस्थितियों के कारण कृषि कार्य समुन्नत अवस्था में नहीं है । अधिक विस्तृत खेत का न होना सीढ़ी नुमा खेत होना, जमीन का बंजर व अन उपजाऊ होना भी पिछड़े पन का कारण है । कृषि के सम्बन्ध में वैज्ञानिक व तकनिकी ज्ञान का आभाव इनकों कृषि कार्य से विमुख कर रहा है । यदि कृषि कार्य किया जाता है, तो उसके लिए बाजार का मिलना दुस्कर है । वैसे आज कल मोटे अनाज कोदो, मड़वा, भट्ट (सोयाबिन), राजमा आदि मोटे अनाजों की खेती करते है । लोगों में स्वाथ्य के लिए हितकर देखते हुऐ

। इनका उपयोग बढ़ा है । इन लोगों के पास ग्राहक भी पहुंच रहे है। आवश्यकता इस बात की है कि इन फसलों के भी उन्नत किस्म के बीज सकरार द्वारा मुहैया कराया जाये । सिंचाई के उत्तम व्यवस्था की जाये । जोतों का क्षेत्रफल बढ़या जायें । जिससे इनका कृषि के प्रति रुझान बढ़े आस पास के गांवों में कृषि अच्छी होने से भी उनमें कृषि मजदूर के रुप में ये कार्य कर सकते है । कृषि व स्थायी रोजगार के अभाव में यह समुदाय किसी तरह मजदूरी करके अपने परिवार का निर्वहन कर रहा है । जंगलों से सुखी लकड़ी लाकर बेचना । लकड़ी चिरान व मुसल निर्माण के कार्य कृषि यन्त्रों के निर्माण करके दैनिक जीवन चर्या को किसी तरह चलाता है । किन्तु आजकल एल0पी0जी0 गैस और क्राकट, स्बेस्टर, टीन और लोहें के उपकरणनों ने इस व्यवसाय को समाप्ति के कगार पर ला दिया है । अब दैनिक मजदूरी करके किसी तरह जीवन यापन करते है । इनमें संचयी प्रवृति न होने के चलते दिन भर

जितना कमाते है । शाम को खा पीकर समाप्त कर देते है । इनमें महिला पुरुष दोनों में समानता है । तथा दोनों ही मजदूरी कार्य साथ – साथ करते है । महिलओं में मद्पान की प्रवृति नहीं के बराबर है । अवश्यकता पुर्ति होने के बाद मजदूरी के कार्य विमुख हो जाते है ।

अन्न भण्डारन की कोई समुच्चित व्यवस्था न होने के कारण ये अन्न बहुत दिनों तक नहीं

रख पाते है । वैसे तो सिंचाई व्यवस्था न होने से खाद पदार्थ का उत्पादन ही कम है । किन्तु जो भी उत्पादन होता है उसके लिए ये लकड़ी के छोटे बक्से का निर्माण करके उसमें

अन्न रखते है । उसको स्थनीय भाषा में ''भक्कार'' कहा जाता है । किन्तु स्वतन्त्रता के बाद भारत सरकार ने विकास के लिए हस्तक्षेप की नीति को अपनाया संवैधानिक प्रावधानों के तहत इनके समाजिक, आर्थिक, शैक्षिणिक व राजनैतिक विकास को संविधान के अन्तर्गत

समाहित किया । प्रथम पंचवर्षी योजना से लेकर आज तक उनके लिए खाद्य समाग्री के आभाव को दूर करने के लिए पी0डी0एस0 प्रणाली का विकास करना कुटीर व लघु उद्योगों के द्वारा उनका उत्थान करने पर बल दिया । खादी ग्राम उद्योग उनके स्थानीय उत्पादों को बाजार उपलब्ध कराता है । उनके शोषण को दूर करने के लिए ''बंधुआ मजदूरी उनमूलन अधिनियम 1976'' तथा अत्याचार को रोकने के लिए अनुसूचित जाति जन जाति निवारण अधिनियम का प्रावधान किया गया । उनमें शैक्षिक स्तर को उठाने के लिए एकलव्य विद्यालय, आश्रम

पद्दत विद्यालय, सर्व शिक्षा अभियान से 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को अनिवार्य शिक्षा अधिनियम को लाया गया । चिकित्सा शिक्षा के लिए आंगनबाड़ी केन्द्र, आशा कार्यकत्रि की नियुक्ति सामुदायिक स्वास्थ केन्द्रों को पहुंच के अन्दर लाना विकास की मुख्य धारा में जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना मनरेगा आदि विभिन्न प्रकार की योजनाओं के द्वारा उनके विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है । आवश्यकता इस बात की है कि आदिवासी सामुदायों में से भी विशेष सामुदायों का चयन करके विशेष योजनाओं के द्वारा पिछड़ी परिवारों का विकास किया जाये । मैनें सर्वेक्षण में देखा कि भोटिया जन जाति विकास की उच्चतम अवस्था पर है जबकि राजी जन जाति निम्नतम् अवस्था में है । सरकारी प्रयासों के साथ – साथ समाज के सम्पन्न लोगों में सेवा भाव विकसित किया जाये । किसी ने कहा है कि – ''समाज को दुष्टों से उतना खतरा नहीं जितना कि सज्जनों की निष्क्रियता से'' इसी प्रकार बेदान्त दर्शन के आधुनिक व्याख्याता स्वामी विवेकानन्द जी कहते है कि – '' ईश्वर को कहा ढुढ़ने चले हो वे सब गरीब, दुखी, दुर्बल मनुष्य क्या ईश्वर नहीं है ? इन्हीं की पूजा पहले क्यों नहीं करते गंगा तट पर कुआं खोदने क्यों जाते हो । '' इस प्रकार समाज के जागरुक लोगों से समाज की सेवा करने को प्रेरित किया जाये । तब जा कर के समाज के उपेक्षित, पिछड़े, दलित, आदिवासी सामुदायों का समुचित विकास होने के साथ – साथ उनकों मुख्य धारा में जोड़ा जा सकता है । पुछने पर ये बताते है कि मेरे पास इतने भक्कार अनाज पैदा हुआ है । कींट नियन्तरण का समुचित ज्ञान न होने के कारण इनकी फसल लम्बे समय तक नहीं रखी जा सकती है । अवश्यकता इस चींज की है कि इनकों इस क्षेत्र का ज्ञान दिया जायें । अर्थ व्यवस्था के लिए विनिमय प्रणाली का विशेष योगदान होता है । इनमें वस्तु विनिमय प्रणाली का बहुत पहले प्रचलन था किन्तु आधुनिक युग में यह संकेत मात्र है । विनिमय की आधुनिक प्रणाली मुद्रा प्रणाली ही इनमें भी प्रचलित है । ग्रामीण स्तर पर समान्य रुप से घरेलु वस्तुओं में कभी – कभी वस्तु अदला – बदली (वस्तु विनिमय) दृष्टि गोचर होता है । ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का प्राण कुटीर उद्योग होता है । राजी जन जाति के पुर्वज लकड़ी

के बर्तन , मुसल, कृषि उपकरण, पट्टरी बल्ला आदि बनाते थे । किन्तु अब यह व्यवसाय लगभग लुप्त हो चुका है । कुछ लोग घास या रामबास की रस्सीयां बनाकर स्वयं उपयोग करने के साथ – साथ बेचते भी है । वर्तमान में कुछ गांवों के लोग बाहरी समुदाय के सम्पर्क में आने से हथकरघा उद्योग के प्रति आकर्षित हो रहे है । भेड़ों के ऊन से निर्मित कम्बल स्थानी भाषा में चुटकी – चुटका (गर्मी पैदा करने वाला वस्त्र) का भी निर्माण करने लगे है ।

वैसे इसमें भोटिया जन जाति के लोगों को महारत हासील है । जौलजिवी में लगने वाले मेले से और भारत सरकार के सुक्ष्म उद्योग मंत्रालय द्वारा परम्परागत पेशे के सम्बर्धन के फलस्वरुप इनकी रुचि इसमें बढ़ी है । लेकिन व्यपारी व साहुकार ही इसका लाभ ले पाते है । वास्तविक धरातल पर इनकों मजदूरी के शिवास अतिरिक्त मुल्य नहीं प्राप्त हो पाता है । फिर भी मजदूरी तो इन्हे प्रतिदिन मिल रही है । यही कम नहीं है । किसी भी अर्थ व्यवस्था के मूल में प्राथमिक द्वितीयक, तृतीयक क्षेत्र का विशेष योग दान होता है । उत्पादन, वितरण, उपभोग तथा सम्पत्ति का स्वामित व विनिमय अर्थ व्यवस्था की प्रमुख इकाईयां है । राजी जन जाति विकास की प्राथमिक अवस्था

में होने के कारण कृषि व पशुपालन कार्यो में ही संग्लन है ।जबकि पिथौरागण जनपद में निवास करने वाली बहुतायत भोटिया जन जाति विकास की सभी अवस्थाओं में समायोजित है । राजी जन जाति की अर्थ व्यवस्था मूलतः प्रकृति पर

ही निर्भर है । प्राकृतिक उत्पादों के सहारे ही अपना जीवन व्यतीत करते है ।

विश्व के किसी भी भू भाग में रहने वाले समाज का समाजिकरण विना शिक्षा के सम्भव नहीं है शिक्षा ही व्यक्ति को समाज में रहने योग्य बनाती है । भारत के मनीषियों ने प्राचीन काल से ही शिक्षा के महता पर ध्यान दिया है । आश्रम व्यवस्था की शुरुवात ब्रम्हचर्य आश्रम से होती है । ब्रम्हचर्य आश्रम में व्यक्ति शिक्षा का अर्जन करता है । बच्चा जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी ना किसी रुप में शिक्षा ग्रहण करता रहता है । शुरुवाती पांच सालों में पुरी तरह से माता व परिवार से शिक्षा ग्रहण करता है । पांच साल की उम्र के बाद विद्यालयी शिक्षा में नामांकित होता है । और स्कूली शिक्षा को ग्रहण करता है । स्कूल में जाकर मित्र मण्डलीय
व अन्य समुहों से ज्ञान अर्जन कर अपना शारीरिक, मानसिक, बौधिक, आध्यातमिक व समाजिक विकास करता है । शिक्षा शाब्दीक अर्थो में शिक्ष् धातु से बना है प्राचीन काल से ही विद्या को विशेष महत्व दिया गया है । भारतीय ग्रन्थों में कहा गया है कि ''विद्या धनं सर्व धनं प्रधानम्'' किसी को अनेक पाश्चात् एवं आधुनिक विचारकों ने भी निम्न् प्रकार परिभाषाऐं दी है ।

''महात्मा गांधी ने कहा है कि शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चे के शारीरिक, मानसिक और आत्मा विद्यमान सर्वोत्तम गुणों का स्वांगी विकास करना है ''प्रमुख समाज शास्त्रीय दुर्खीम ने कहा है कि '' शिक्षा अधिक आयु के लोगों द्वारा ऐसे लोगों प्रति की जाने वाली क्रिया है जो अभी समाजिक जीवन में प्रवेश करने के योग्य नहीं है । इनका उद्देश्य शिशु में उन भौतिक, बौधिक और नैतिक विशेषताओं का विकास करना है । जो उसके लिए सम्पूर्ण समाज और प्रार्यावरण से अनुकूलन करने के लिए आवश्यक है । इसी को ध्यान में रख कर प्राचीन काल से अब तक शिक्षा को विकास की मुख्य धारा में जोड़ने में महत्व भुमिका है । यदि शिक्षा की गुणवक्ता उच्च श्रेणी की होगी तो समाजों का स्तर भी उच्च होता है ।

यदि जन जातीय इलाकों पर दृष्टिपात किया जाये । तो इनकी शिक्षा की दशा अत्यन्त ही सोचनी है । आज विकास के साथ ही इनकी शिक्षा – दीक्षा में भी वांक्षित उन्नत नहीं हो पा रही है । यदि शिक्षा का विकास कर दिया जाये तो इनकों सरकारी योजनाओं का समुचित लाभ मिलने के साथ – साथ समाज की मुख्य धारा में जोड़ा जा सकता है । स्वतन्त्रता के 70 वर्षों के बाद भी आज तक इनमें शैक्षिक ज्ञान का स्तर निम्न् है । स्कूलों में सुविधाओं का आभाव हैं तथा आधुनिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा नगण्य है । आधुनिक युग ज्ञान

का युग है । इसकी चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए हमारे शिक्षण संस्थाओं के पास साधन और संसाधनों का नितान्त आभाव है । किन्तु यह आधार भी जर्जर अवस्था में पहुंच चुका है । शिक्षिकों की कमजोर आर्थिक स्थिति, राजनीतिक भय व अल्प शैक्षिक योग्यता ने गिनती, पहाड़े, अक्षर ज्ञान कराने को शिक्षा मान बैठा है । इस स्तर में

सुधार की आवश्यकता पर बल देने की आवश्यकता है । राजी जन जाति के परिपेक्ष में ध्यान दिया जाये , तो इनकी प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक स्थिति बहुत ही सोचनी है । नजदीकी समुदायों के सम्पर्क के कारण कुछ लोग वर्तमान शिक्षा पद्दति से जुड़ रहे है । आज तक राजी जन जाति के तीन स्नातकोत्तर, एक स्नातक उर्तीण है । और ये सब एक ही परिवार से जुड़े हुऐ है । इण्टरमीडिएट में दो बालिकाऐं अध्ययन रत है । किन्तु बालकों की स्थिति अत्यन्त ही सोचनीय है । शिक्षक मानक के अनुरुप नहीं है । जन जाति सामुदायों हेतु विद्यालय इनकी पहुंच से अत्यधिक दूर है । सर्व शिक्षा अभियान के तहत प्राथमिक विद्यालय तो इनकी पहुंच में आ गये है किन्तु हाईस्कूल व इण्टर की विद्यालय सभी लोगों के पहुंच में नहीं है । जौलजीवि, बलुआंकोट,धारचुल्ला,मुंस्यारी, में आश्रम पद्धति विद्यालय बने हुए है लेकिन इसमें शिक्षकों की कमी है । साथ ही साथ शिक्षण की नवीन विधियों का भी आभाव है । भाषा गत समस्या शिक्षकों को उदासिनता की ओर ले जाता है । आवासीय विद्यालयों में किशोरा अवस्था मे आने वाले परिवर्तनों हेतु उचित परामर्श एवं निर्देशक की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण पलायन होता चला जा रहा है । वहां पर बच्चों से बात करने पर पता चला कि वे यहां रहना नहीं चाहते है तथा स्वतन्त्र रुप से जीवन यापन करना चाहते है । वर्तमान में प्रत्येक गांव के प्रत्येक बच्चों का नामांकन किसी ना किसी शिक्षण संस्था में है या तो वे आंगनवाड़ी केन्द्रों में अध्ययनरत है या प्राथमिक विद्यालयों में है । यह जन जाति सदियों से स्कूली शिक्षा ये वंचित रही है । जिससे आधुनिक मुल्यों में समायोजित होने में कठिनाई होती जा रही है । इनकों अपने विकास की योजनाओं का भी पूर्ण ज्ञान नहीं है । प्राथमिक शिक्षा ही पूरी व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी होती है । प्राथमिक शिक्षा में बच्चें का पूर्ण समाजिक करण किया जाता है । इसी उम्र में बच्चें को जिस दिशा में मोड़ना चाहते है उस दिशा में मोड़ सकते है । उसका मष्तिक कोरा कागज के समान होता है । कबीर दास जी कहते है कि '' गुरु कुम्हार शिश को जिस दिशा में ढ़ालना जाहते है । तो उस दिशा में ढ़ल जाता है । लेकिन निम्न् विवरण से उनके प्राथमिक शिक्षा की स्थिति का पता चलता है ।

राजी जन जातिय ग्राम के बच्चों का विद्यालीय प्राथमिक शिक्षा वर्णन ।

शिक्षा की स्थिति का पता चलता है ।

राजी जन जातिय ग्राम के बच्चों का विद्यालीय प्राथमिक शिक्षा वर्णन ।

राजी ग्राम	कक्षा 1		कक्षा 2		कक्षा 3		कक्षा 4		कक्षा 5		बालक योग	बालिका योग
	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका		
किमखोला	02	03	01	02	01	02	02	01	01	01	07	09
गांड़ागांव	01	00	00	01	00	00	00	00	00	00	01	01
भगतिरवा	01	01	00	01	00	00	00	00	00	00	01	02
मदनपुरी	01	02	00	01	02	01	00	00	01	01	04	04
जमतड़ी	01	01	00	01	02	01	01	01	00	00	02	02
कुटा चौरानी	00	02	03	01	00	01	01	01	01	01	05	06
औलातड़ी	01	00	00	00	00	00	00	00	01	01	02	01
कुलेख	01	00	00	01	01	00	00	00	00	00	02	01
चिफलातड़ा	00	00	01	00	00	01	01	01	00	00	03	02

स्रोत व्यक्तिगत संकलन व डायट से प्राप्त

राजी जन जातिय ग्राम के उच्च स्तर पर शिक्षा का विवरण।

राजी ग्राम	कक्षा 9		कक्षा 10		कक्षा 11		कक्षा 12		स्नातक		स्नातकोत्तर	अन्य	योग
	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका	बालक	बालिका			
किमखोला	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	02	00	02
गांड़ागांव	02	02	00	00	00	00	00	00	00	01	00	00	05
भगतिरवा	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0
मदनपुरी	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0
जमतड़ी	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0
कुटा चौरानी	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0
औलातड़ी	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0
कुलेख	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	00	0
चिफलातड़ा	00	00	00	00	00	00	01	01	00	00	00	00	02
												योग	07

स्रोत व्यक्तिगत संकलन व डायट से प्राप्त

भारत सरकार के व राज्य सरकार के प्रयासों के फलस्वरुप इस जन जाति के विकास के लिए मुख्य धारा मे जोड़ने में शिक्षा की भुमिका महत्पूर्ण है । सर्व शिक्षा अभियान के तहत प्राथमिक विद्यालय लगभग सभी जगह सुलभ हो गये है । चिफलतड़ा में राजी जन जाति के बच्चों के लिए कोई प्राथमिक विद्यालय तो नहीं है । लेकिन वहां के बच्चे भी दूर तक चल कर बगल के विद्यालयों में जाते है । तथा शिक्षा व्यवस्था से जुड़ रहे है । शिक्षा के विकास से अन्धविश्वास में कमी आ रही है । भले ही समाप्त तो नहीं हुआ है । लेकिन झार –

फूक के अलावा आधुनिक चिकित्सा पद्धति में भी विश्वास करने लगे है । इस सामुदाय के लोग जंगलों में रहने के कारण कुछ जंगली जड़ी – बुट्टीयों का भी ज्ञान रखते है । आवश्यकता इस बात की है कि उनके इस ज्ञान का भी प्रयोग करके समान्य जन मानस को इनसे परिचित कराया जाये तथा उनकों बाजार उपलब्ध करायी जाय जिससे आम जन भी लाभान्वित हो सके । सरकार के प्रयासों से लगभग सभी 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चें विद्यालयों में नामांकित है । कुछ लोग विद्यालीय शिक्षा प्राप्त कर कुशल श्रमिक भी हो रहे है । तथा मजदूरी के अलावा राज मिस्त्री का कार्य भी करने लगे है । उनके प्रतीकों में परिवर्तन हो रहा है । संस्कृतिकरण की प्रक्रिया फलस्वरुप हिन्दू जीवन पद्धति व हिन्दू – देवी– देवताओं की पूजा करने लगे है । शिक्षा प्राप्त कर लोकतात्रिंक व्यवस्था में समायोजित हो रहे है । गांवों में सर्वेक्षण से पता चलता है कि बच्चे पढ़ – लिखकर सरकारी सेवा में जाना चाहते है । इस समुदाय के दो तीन लोग पूर्ण कालिक व अंश कालिक सेवा दे रहे है । सरकार के समाजिक विकास के कार्यक्रम व उनमें लगे हुए । लोगों के प्रयास से समाज के मुख्य धारा में जुड़ रहे है । शिक्षा के प्रयास से बाल विवाह में कमी आयी है । लेकिन आज भी बहुतायत में जारी है । आश्रम पद्धति के विद्यालयों से भी भागकर विवाह रचा लेते है ।

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक गतिशीलता का सशक्त माध्यम हैं। इसके द्वारा विभिन्न प्रकार के समाजों में गतिशीलता पाई जाती है। राजी समुदाय के लोगों के लिए सर्वेक्षण के दौरान यह बात देखने को आयी कि इस समुदाय के लोंगो के जीवन स्तर व सामाजिक तौर तरीकों में गतिशीलता आ रही हैं। आज ये नए नए स्थानों में रोजी रोटी की खोज में निकल रहें हैं। अपने पुराने पुस्तैनी धंधों लकड़ी काटना आदि को छोड़कर ये मजदूरी,सरकारी व गैर सरकारी सेवाओं को अपना रहे हैं। राजनैतिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में भी अपनी भागदारी सुनिश्चत कर रहे हैं। और अन्य समाजों के संपर्क में
आकर नए–नए तौर तरीके को सीख रहे हैं। इनके बच्चे आवासीय विद्यालय में भी रहने लगे हैं। शादियों में डी0जे0 नृत्य,संगीत,मेंहदी आदि अन्य समुदाय की तरह करने लगे हैं। यजमान–पुरोहित प्रणाली में भी परिवर्तन आ रहे हैं। अब नए–नए पुरोहित प्रणाली में भी परिवर्तन आ रहे हैं। नामकरण में अपने बच्चों के नाम आधुनिक प्रकार के रख रहे है। महिला पुरुष दोनों समान रुप से समाजिक गतिशीलता को बढ़ावा दे रहे है। अतः शिक्षा द्वारा राजी समुदाय में सामाजिक गतिशीलता निरन्तर प्रगति कि ओर अग्रसर हो रही हैं। और विकास की मुख्य धारा में जुड़

रही है । हिन्दू समाजिक व्यवस्था में आश्रम व्यवस्था का विशेष स्थान है । वानप्रस्थ व संयास आश्रम समाज के कल्याण के लिए बनाया गया है । इसमें व्यक्ति

समाज कल्याण के लिए गांव – गांव जाकर शिक्षा द्वारा उत्थान करता था । इस दिशा में एक स्वयं सेवी संगठन हेल्पीया अस्कोट में स्थित अर्पण संस्था इनके विकास के लिए लगातार प्रयास कर रही है । स्वामी विवेकानन्द जी कहते है कि ''शिक्षा स्वयं दरवाजे – दरवाजे क्यों ना जाये ? अगर खेतीहर का लड़का शिक्षा तक नहीं पहुंच पाता तो उससे हल के पास या कारखाने में अथवा जहां भी वही क्यों ना भेंट की जाये । जाओं उसी के साथ उसकी परछाई के समान उसका विकास करो ''विवेकान्द साहित्य दशम खण्ड''

शिक्षा का स्तर न्यून होने के कारण उनका आर्थिक शोषण जो किया जा रहा था । बच्चों के शिक्षित होने से कुछ हद तक कमी आयी है । शिक्षा और आधुनिक संसाधनों ने उनके परम्परागत काष्ठ – कलां विलुप्ति के कगार पर पहुंच चुकी है । काष्ठ – कलां अब नाम मात्र की रह गयी है । आवश्यकता इस बात की है उनके विरासत को सहेजा जाये तथा सरकार की मंशा के अनुरुप उसे उचित बाजार उपलब्ध कराया जाये । आधुनिक सम्पर्क में आने के कारण मद्पान, नशा खोरी, आधुनिक पहनावें को अपना कर उनमें विकास के साथ – साथ विनाश के तत्व भी आने लगे है । खान – पान में परम्परागत

खाद्य पदार्थो के स्थान पर जंकफूड व फास्टफूड को अपनाने से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है । शिक्षा के विकास से जहां ये मुख्य धारा में जुड़ रहे है । वही इनके परम्परागत ज्ञान को भी इसमें सम्मिलित किया जाये । इनके पर्यावरण ज्ञान को पाठ्य चार्या में सम्मिलित कर प्रकृति प्रेम का उदाहरण दे कर अन्य जन मानस को पर्यावरण के संकट से बचाया जा सकता है । राजी जन जाति में शिक्षा का स्तर अन्य जन जातिय समुहों से बहुत ही कम है । लेकिन आज कल लगभग सभी बच्चें शिक्षा से जुड़ चुके है । रोजी– रोटी का संकट इसमें एक बांधा का कार्य करता है। रोजगार सृजन के लिए आवश्यकता इस बात की है । परम्परागत पेशे को भी महत्व दिया जाये । उनके लिए रोजगार केन्द्र खोले जाये । राजी भाषा की समस्या

को दूर करने के लिए स्थानीय स्तर पर दशमी व बारहवीं पास अभ्यर्थीयों को प्राथमिक शिक्षा में अंश कालिक रोजगार देने से उनकी समुह में सहभागीता व भाषा गत समस्या दूर होगी ।

इस प्रकार शिक्षा वह गतिशील एवं समाजिक पक्रिया है । जो मनुष्य क आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास करने मे सहायता देती है । शिक्षा पढ़ने – लिखने का ज्ञान देने के साथ – साथ व्यक्ति के आचरण, विचार व दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन है । जो समाज तथा सम्पूर्ण विश्व के लिए लाभदायक होती है । भारतीय ग्रन्थों में कहा गया है कि शिक्षा हमें समाज में रहना सिखाती है । जैसे मनुस्मृति में कहा गया है कि विद्यार्थी की दैनिक क्रिया क्या और कैसी होनी चाहिऐ । '' अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन : ।, चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ।। अगर शिक्षा का यह उद्देश हो तो समाज में समाजिक समस्याऐं वृद्धा आश्रम की आवश्यकता नहीं होगी । हम देखते है कि इस जन जातिय में कोई भी वृद्धा आश्रम में नहीं रहता है । स्वामी विवेकानन्द जी कहते है कि कठोपनिषद में कहा गया है कि –

त्तष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत । उठो – जागो और अपने लक्ष्य की प्राप्ति में लग जाओ विवेकानन्द जी कहते है कि वेदान्त कहता है कि ''नर सेवा नारायण सेवा'' की परिकल्पना पर चल कर के शिक्षा के मूल उद्देश को प्राप्त किया जा सकता है। हम जीवन का प्रारम्भ जब विद्यालीय शिक्षा से करते है तो विद्यालय में जाने पर सुबह – सुबह यह प्रार्थना करते है कि ''वह शक्ति हमें दो दया निधे कर्तव्य मार्ग पर डट जावें पर सेवा पर

उपकार में जीवन अपना सफल बना जावें । जो है अटके भूले – भटके उनको तारे, खुद तर जावें'' अर्थात शिक्षा के द्वारा हम अपना विकास तो करे समाज के वंचित ही और दुर्बल को भी शिक्षा ज्ञान देकर विकास की मुख्य धारा में जोड़े और स्वयं भी और उनका भी विकास करे । प्राचीन काल से ही हमारी शिक्षा का यही उद्देश चला आ रहा है । किन्तु मैकाले ने अपनी अवश्यकता की पुर्ति के लिए कम्पनीयों में कर्लक की नियुक्ति व हां जी–ना–जी तक सीमित कर दिया तथा अक्षर ज्ञान को ही शिक्षा समझ लिया । शिक्षा को अपने अनुकूल तथा अपनी विचार धारा को थोपने के लिए परिवर्तित कर दिया । आजादी के बाद मैकाले के मानस पुत्रों ने भी उसी प्रकार की शिक्षा को आगे जारी रखा । शिक्षा का मूल उद्देश्य लोकतांत्रिक, समाजिक, आर्थिक, नैतिक और जीवन उपयोगी मूल्यों से आम जन को विमुख कर दिया । जिससे समाज में आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार, समाजिक असमरसता फूट डालों राज करो की नीति ने हमारे समाज व देश को प्रभावित किया । देश की उन्नति जिस प्रकार से होनी चाहिऐ उस प्रकार से नहीं हो पायी । अवश्यकता यह है कि देश और समाज को ''परम् वैभव'' के पद पर पहुंचाने के लिए शिक्षा को समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों से युक्त करने की जरुरत है । समाज के उपेक्षित वर्गों के पास भले ही अक्षर का ज्ञान न हो लेकिन उनमें नैतिक मूल्यों का ज्ञान कूट – कूट के भरा है । यही ज्ञान हमने व्यक्तिगत सर्वेक्षण में समाजिक रुप से उपेक्षित राजी जन जाति में देखने को मिला ।

संदर्भ सूची –

1. प्राचीन भारत का इतिहास डा0 के0सी0 श्रीवास्तव ।
2. भारत की जन जातियों पर अध्ययन – मजूमदार एवं मजुमदार।
3. समाज शास्त्र शब्दकोष – रावत पब्लिक केशन।
4. भारतीय समाज – रावत पब्लिक केशन ।
5. कुमांयू का इतिहास – बी0डी0 पाण्डेय ।
6. कुमांयू एवं गढ़वाल की लोक कथाओं की विवेचन डा0 प्रयाग जोशी।
7. शोध अध्ययन जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पिथौरागण ।

8. भाषा एवं मनोभाव एवं भाषा प्रयोग सर्वेक्षण – भारतीय संस्थान मैंसुर डा0 परमान सिंह एवं डा0 सत्येन्द्र अवस्थी ।
9. व्यक्ति साक्षातकार एवं अवलोकन ।
10. राजी समाज के प्रबुद्ध जनों द्वारा भाषा गत समस्या निवारण ।
11. भारत का संविधान ।